

## 30-03-2023 प्रजापिता ब्रह्माबाबा की वाणी

**"मीठे बच्चे... बाप के साथ 108 मणके बाप की यात्रा पर चलेंगे। वही 108 मणके सतयुग को उठाने का कार्य करेंगे, पुरे तख्त को उठाने का कार्य करेंगे! ऐसा नहीं है वो सतयुग में जाकर के मिलेंगे! वो 108 मणके यहाँ कार्य कर रहे हैं, जगह-जगह अपने-अपने कर्तव्य कर रहे हैं। वो 108 मणके धीरे-धीरे सब बाबा अपने पास इकट्ठा कर लेंगा।"**

सब बच्चे खुश हो? ठीक हो? पहुँच गए? अच्छा बाबा याद है? खुश होना? सदा खुश रहना है। अच्छा सवाल ये है कि जब भी अपन आते हैं तो इस गद्दी को छोड़कर इस गद्दी पर क्यों बैठते हैं? बताओ बताओ देखते हैं आज कौन पास होता है। बड़े होशियार बच्चे हैं! बताओ। अच्छा सवाल का जवाब नहीं मिला? बाबा अपने बच्चों को हमेशा याद दिलाता है कि बच्चे ये मधुबन वाली गद्दी मैंने छोड़के, साधारण चीज पे मैं आ गया हूँ अपने बच्चों के लिए। समझ में आया? बार-बार ये याद दिलाते हैं, हर बार ये याद दिलाते हैं, कि मैं अपने बच्चों के लिए नीचे गद्दी पे आ गया हूँ। ये याद रहे फिर भी बच्चे नहीं सुधरे तो मेरे पास एक और गद्दी है। "धर्मराज" की गद्दी। तो देखो बापने परमधाम की गद्दी छोड़ी, परमधाम की गद्दी छोड़के मधुबन की गद्दी ली, मधुबन की गद्दी छोड़ी अपने बच्चों के लिए पूरे विश्व में जो जहाँ नहीं पहुँच पाते हैं, उन सब से मिलने के लिए फिर छोटी गद्दी ली। पूरे संसार में जो भी बच्चे हैं जो भी प्यार करने वाले हैं, जो भी... मानो एक बच्चा बहुत महारथी है, बहुत बाप को याद करता है, भले एक बच्ची हो पर इतना याद बाबा को करती है, इतना करती है, बाबा उस एक बच्ची के लिए भी उधर जाकर के पूरे प्रोग्राम को अरेंज करके उस भीड़ में से उस बच्ची को मिल के आ जाएगा। ये बाबा का प्रेम है। ये बाबा का हर बच्चों के प्रति प्रेम है। क्या इतना प्रेम बच्चों का है? सभी बच्चियाँ बैठके बोलती हैं- बाबा मैं आपको बहुत याद करती हूँ... मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ... बाबा क्या बोलते हैं? प्यार की निशानी क्या होती है? जो बाबा कहे "जी बाबा"! इतना पक्का कौन बना है? अच्छा इतनी बारी अपन आते हैं तो हर बारी क्या बोल के जाते हैं? अभी 2 मास से क्या बोल रहे हैं? ( बच्चों ने कहा सतयुग आ गया, किसी ने कहा समय कम है, किसी ने कहा आज्ञाकारी ) हाँ, "आज्ञाकारी"। है कोई आज्ञाकारी? या सब आज्ञाकारी है? ये "आज्ञाकारी" शब्द आप बच्चों को अभी थोड़े समय के बाद याद आएगा कि आज्ञाकारी बाबा बार-बार क्यों बोलते हैं। बाबा क्यों आज्ञाकारी के लिए बार-बार बोलते हैं? सबसे पहली बात जो मम्मा की आज्ञा सो अपनी आज्ञा और सो शिव बाबा की आज्ञा। ये नीचे से ऊपर है। अब ऊपर से नीचे आओ जो शिव बाबा के आज्ञा, सो अपनी, और वही फिर मैया की। यहाँ कोई बैठ के अलग-अलग या एक एक को कुछ श्रीमत नहीं दिया जाता। यहाँ सब को श्रीमत दिया जाता है।

ऐसा नहीं होता है कि किसी को अपन श्रीमत दे, किसी को मम्मा दे, मम्मा अलग दे, अपन अलग दे। जो मम्मा ने बोल दिया वहाँ अपनी मोहर लग गई, और वो बोलेगी ही वो उनसे निकलेगा ही वो जो शिवबाबा बोलेगा। समझ में आया। ये इधर बुद्धि में बिठा लो। आप वास्तव में रह किसके साथ रहे हो! अभी तक अजुन किसी को ये निश्चय हुआ नहीं है कि हम किसके साथ रह रहे हैं! ये निश्चय हो जावे तो यूँ पूरे विश्व में अपने आप सतयुग आ जावे, अपने आप प्रत्यक्षता हो जावे।

बच्चे कहाँ ना कहाँ अपनी बुद्धि से क्या हो जाते हैं? अब ये ऐसा नहीं होता है जिन्होंने इधर बाप को पहचाना वो पास हो गए हैं। जिन्होंने बाप को पहचाना वह तो पास हो गया, पर जिन्होंने बाप के साथ जुड़कर के बाप की आज्ञा का पालन किया, पूरे परिवार को स्वीकार किया, पास तो सही मायने में वो है। जैसे किसी लौकिक दुनिया की भक्ति में जाते है, मानो मेन पेपर दौड़ी भी पेहेन ली आपने, उसमें तो निकल गए, निश्चय हो गया - हाँ, हम पास हो गए, हम पास हो गए! बाकी जो दूसरे पेपर हैं, फाइनल तो वो होते हैं। मानो आपने दौड़ी पेहेन ली और आपको बीमारी निकल गई कुछ भी, क्या आप सिलेक्ट हो पाएंगे? नहीं हो पाएंगे! बीमारी कौन सी? मन की बीमारी, देह अभिमान की बीमारी। भले इस बड़े पेपर में पास हो जावे, पर अगर देह अभिमान की बिमारी से मुक्त नहीं हुए, तो भी नंबर कट सकता है। इसलिए बाबा बार-बार बोलते हैं - बच्चे देह अभिमान से पार उठो... देह अभिमान से ऊपर उठो... देह अभिमान सत्यानाश करने वाला है... देह अभिमान पुरुषार्थ को गिराने वाला है... देह अभिमान हमारा पद भ्रष्ट करने वाला है। देह अभिमान क्या नहीं करने वाला है ये देखो। ये देह अभिमान निकाल दो। ये देह अभिमान कभी उड़ाएँगा नहीं, ये पैरों में भारी भारी पत्थर बंधेगा और नीचे लटका देगा, आप कभी ऊपर नहीं उड़ पाएंगे। तो क्या करना है? देह अभिमान को निकालकर अपने को आत्मा समझ, देही अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करना है- ये पुरुषार्थ है। देह अभिमान तो आपे ही चकनाचूर हो जाएगा जब हम माँ-बाप को कहेंगे "जी बाबा"। दिल से हाँ, मुख से नहीं... कि हाँ, बोला है ना, थोड़ा सा मान लेते हैं। मजबूरी में मानने वाले नहीं चाहिए।

108 की माला के मणको की निशानियाँ आप लिखना। 108 माला के मणको की निशानियों की लिस्ट बना करके अपने को देना, और उसमें कुछ और छूट गया तो वो अपन ऐड करेंगे ठीक है। और वो फिर प्रिंट करके सबको देना। और अभी भी बोल रहे हैं बाप के साथ 108 मणके बाप की यात्रा पर चलेंगे। वही 108 मणके सतयुग को उठाने का कार्य करेंगे। पुरे तख्त को उठाने का कार्य करेंगे वही 108 मणके! वो 108 मणके ऐसा नहीं है सतयुग में जाकर के मिलेंगे! वो 108 मणके यहाँ कार्य कर रहे हैं, जगह-जगह अपने-अपने कर्तव्य कर रहे हैं। वो 108 मणके धीरे-धीरे सब बाबा अपने पास इकट्ठा कर लेंगा। तो 108 मणको की निशानियाँ क्या होती है सुनाना। तो ये बाहर में भी हर एक बच्चे को केहना, ये बाप का संदेश देना, कि 108 मणके कौन होते हैं। जो निश्चय में बिठा के बैठ गए कि हम तो 108 की माला का दाना है। ऐसा नहीं... 108 की माला का दाना बनने की मेहनत क्या होती है, वो 108,

आठ की कॉपी होते हैं। क्या होत हैं मालूम? आठ की कॉपी होते हैं। तो हर एक बच्चा अपना पुरुषार्थ देखना है कि मैं कहाँ तक पहुँचा हूँ...? मैं क्या बना हूँ...? मैं क्या बन रहा हूँ...? या बनते बनते रुक तो नहीं गया हूँ...? अपनी यात्रा को चेक करे। चेक करे मैं यहाँ क्या करने आया हूँ...? मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ...? यहाँ आ करके मैंने क्या पाया है...? यहाँ आकर के मैंने कितना भाग्य बनाया है...? कितना ऊँच बनाया है...? कितने संस्कारों को परिवर्तन किया है? यहाँ आने के बाद अपने जीवन कहानी को लिखना कि मुझ में क्या क्या परिवर्तन आया है ठीक है। ये चीज याद रखना। और अभी जो बच्चे हो या बच्चियाँ हो... जो ये कहते हैं कि हम उस आत्मा में आने वाले बाबा को तो मानते हैं, शिव बाबा को भी मानते हैं, ब्रह्मा बाबा को भी मानते हैं, पर इनसे हम कोई कनेक्शन नहीं रखेंगी, इनसे हम कोई कनेक्शन नहीं रखेंगे। ये तो वही बात हुई ना कौन सी बात? ब्रह्मा से हमारा कोई भी कनेक्शन नहीं है, कोई रिश्ता नहीं, डायरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन रखना है। तो ठीक है डायरेक्ट शिव बाबा से कनेक्शन रखो अच्छी बात है! तो जो बोलते हैं हम सतयुग में आएंगे तो कैसे आएंगे? अगर लक्ष्मी के साथ ही कनेक्शन नहीं होगा, लक्ष्मी को ही बोलेंगे कि हमारा आपसे कोई कनेक्शन नहीं होगा, जो स्वर्ग के गेट की चाबी को लेकर बैठी है! वहाँ कोई पक्षपात की बात ही नहीं है, कि जिसको पसंद करेगी वो जाएगा। ना... वहाँ सिर्फ पुरुषार्थ की बात है। एक यही ऐसा कोर्ट, जज, वकील है जहाँ पक्षपात की बात ही नहीं होती। जहाँ सिर्फ हमारा पुरुषार्थ, हमारा प्रेम, हमारा आज्ञाकारीपना, हमारा समर्पण ही हमें आगे लेके जाएगा। हम कितना समर्पण बुद्धि है...? हम कितने आज्ञाकारी हैं...? हम कितने वफादार हैं...? ये हमें आगे लेकर जाएगा, ये हमारा सही पुरुषार्थ है। तो ऐसा पुरुषार्थ जिसका हुआ है बधाई हो! जिसका नहीं हुआ है वो कर ले, क्योंकि बारी-बारी ये ही चीज बोलेंगे, क्योंकि समय बिल्कुल नहीं है। ज्ञान की चद्दर ओढ़ के ना लेते कि अभी तो है ना, अभी तो बाबा बार-बार बोल रहा है, समय नहीं है, समय नहीं है। ये चद्दर ओढ़ के मत लेटना क्योंकि चद्दर के साथ ही बहके चले जाएंगे, मालूम भी नहीं पड़ेगा, सीधा वतन में ही चद्दर ओढ़े मिलेंगे। ठीक है।

हर एक बच्चा अपने पुरुषार्थ को देखो, कितना प्रेम है बाबा से हमें? हम कितने आज्ञाकारी हैं? हम कितने वफादार है उसके लिए? अरे जिसको जीवन दिया, जिसको समर्पण हो गए, जिसके लिए सबकुछ किया, देखो मम्मा बाबा के साथ कैसे रहना है। धन के हैं... धन के! निधन के नहीं हैं। सोचो हमारा पिता परमपिता धणी धोरी हमारे साथ में है। तो अब देखना है हमें पुरुषार्थ कैसे करना है। ये हर एक बच्चा अपनी अपनी डायरी में नोट करे।

दूसरी बात बाबा बारी-बारी हमेशा याद दिलाते हैं- बच्चे यहाँ मेन हमारा "कर्मा" है। क्या है? "कर्मा"! जब बच्चा पैदा होता है तो क्या मिलती है उसको पहले? "माँ"...! "कर" "माँ"...! "माँ" के साथ "कर" भी मिलता है। हम कितना अच्छा कर रहे हैं वही हमें मिलेगा। "कर्मा" ये हमारे साथ बंध के आया है, छोड़ता नहीं है। जैसे माँ अपने बच्चे को कभी नहीं छोड़ती ना,

माँ कैसे चिपक के रहती है अपने बच्चे के साथ। तो एक होती है लौकिक "माँ", एक होती है "कर्मा" तो दो माँएं साथ में चलती है। कौन सी माँ ? "कर्मा" और लौकिक माँ। जैसे लौकिक माँ अपने बच्चे को कितना प्रेम करती है, उसको सुधारने के लिए भले छड़ी भी लगाएंगी, लेकिन उसको सुधारेगी ना। तो एक "माँ" और एक "कर्मा"... वो भी बहुत प्यारी है! कैसे? कितना अच्छा करोगे तो उसका कई गुणा बढ़ा करके देंगी, बहुत बड़ा बोनस मिलेगा, बहुत ऊँचा बोनस मिलता है। अगर कर्मा पे ध्यान दिया तो... कर्मा की केयर (care) की तो... कर्मा को अपना लिया तो... बहुत बड़ा बोनस मिलता है! कर्मा बहुत प्यारी है! सोचो ये माँ तो चूक कर सकती है, पर कर्मा चूक नहीं कर सकती। लौकिक माँ, शरीर देने वाली चूक हो सकता है थोड़ा बहुत ऊपर नीचे, पर कर्मा कभी चूक नहीं करेगी, वो बराबर हिसाब रखती है, एक-एक पाई का हिसाब रखती है। तो कौन सी माँ को खुश करना है? कर्मा को खुश करोगे तो लौकिक माँ आपे ही खुश हो जाएगी। समझ में आया? क्योंकि इतने अच्छे बच्चे किसको प्यारे नहीं लगते? इतने आज्ञाकारी बच्चे किसको प्यारे नहीं लगते? इतने वफादार बच्चे किसको प्यारे नहीं लगते? तो लौकिक माँ, लौकिक बाप दोनों खुश! तो अब याद रखना है, जो करोगे वो लौटके आएगा... आज नहीं तो कल आएगा... एक गुणा नहीं, सौ गुणा आएगा। चाहे वो अच्छा हो, चाहे वो बुरा हो। तो इसलिए हर एक आत्मा अपना ध्यान रखना है, हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है, मुक्त होना है अपनी बुराइयों से। रावण का राज्य जाने वाला है। अभी भी हम रावण की पूँछ पकड़के रहेंगे, हाय मेरा! हाय मेरा! सबकुछ मेरा, तेरा भी मेरा, ये भी मेरा, वो भी मेरा, जो मिल जाए वो सब मेरा, तो क्या होगा?

आज बच्चे भविष्य की फिक्र में इतना टेंशन में रहते हैं, कितनी फिक्रात में रहते हैं, कल को विनाश हो जावे तो क्या गति होगी? "अंत मती सो गति" हैना... तो क्या गति होगी? दुर्गति होगी, अगर ऐसी सोच में मरे तो। क्या कोई दुर्गति को पाना चाहते हैं? सोचो, नहीं ना? तो क्या करना है? "अंत मते सो गति"। मेरा, मेरा, मेरा, की पूँछ पकड़ कर के कोई पार नहीं होता, क्योंकि मेरे मेरे की पूँछ को तो भगवान काट के आगे निकल जाता है। वो पूँछ कभी नहीं लगाता मेरा मेरा की। क्यों? क्योंकि जब वो लेके जाते हैं ना, शरीर छोड़के जाते हैं, तो कौन सी पूँछ काटते हैं? मेरा ये.... मेरा वो... मेरा ये... मेरा ऐसा... ये सारी पूँछ खत्म करके ही लेकर जाता है। कहो ना "मेरा बाबा"! कहो ना "प्यारा बाबा"... "शुक्रिया बाबा"... "आपने मुझे अपना बनाया"... "मुझे अपने गले से लगाया"... "मुझे इस दुनिया के नर्क के सागर से, नर्क के दलदल से बाहर निकाला"...! देखो बाबा ने क्या कहा- बच्चे डूब रहे थे बाकी बची थी चोटी। बाबा ने आया और चोटी पकड़ के खींच लिया। फिर अच्छे से नहलाया धुलाया फिर भी बच्चों को क्या याद आया? नहीं वो दलदल थी ना,... बड़ा मजा आ रहा था उसमें डुबकी लगाने में। फिर भी भाग के क्या देखते हैं? अच्छा मैं इसमें थी! अच्छा मैं इसमें था! अच्छा लग रहा था! वहाँ दम घुट रहा था वो नहीं दिख रहा है। गधे नहीं बनना है। गधा क्या करता है बताओ? उसको कितना भी साफ सुथरा करो, अच्छे से नेहलाओ, धुलाओ, पर जहाँ भी उसको दलदल दिखे, जहाँ भी उसको धूल- मिट्टी दिखे, वहीं पे गुलाटियाँ मारना शुरू करेगा। तो क्या नहीं बनना है? गधा नहीं बनना है। मिट्टी में गुलाटियाँ मार के फिर

ऐसे सोचो हाँ, अब मैं ठीक हूँ, अब मैं सज गया हूँ। मिट्टी को तो गधा अपना श्रृंगार समझता है कि मानो ये मेरे गहने हो, और इनको पहने बिना मैं रह नहीं सकता। क्या बनना है? "हुसैन का घोड़ा" बनना है! हुसैन के घोड़े का गायन है ना। ये सोचो मेरा बाबा मुझसे पूरे विश्व में प्रत्यक्षता कराएगा, हर कोई ये सोचो। याद रखे ये बुद्धि में, वो अपने मालिक का नंबर वन वफादार होता है। अपने मालिक का नंबर वन आज्ञाकारी होता है। उसका मालिक कितनी भी दूर बैठके इतनी सी भी आवाज लगाएँगा ना तो वो दौड़ा दौड़ा चला आएगा, कुछ नहीं देखेगा, कुछ नहीं सोचेगा। रास्ते में कौन मिलेगा? क्या मिलेगा? नहीं... जहाँ मालिक की आवाज आयी, वहाँ एक सेकंड भी नहीं लगाएगा, हर चीज से टकराता हुआ अपने मालिक के पास जाके रुकेगा। और गधा क्या करता है? भले मारते रहो, खिसकेगा ही नहीं। भले कुछ भी करते रहो वो जाएगा ही नहीं। बस जहाँ मिट्टी मिली वहीं पे लोटपोट करता रहेगा। ये देखो क्या फर्क है, अब सोचो हमें कैसा बनना है? कि एक बार कहा मेरे मालिक ने "आओ मेरे बच्चे आओ इधर आओ".... एक आवाज दी, एक सिटी भी मारेगा ना, एक आवाज भी देगा ना, थोड़ी सी भी आवाज आएगी ना... आपको मालूम है संकल्प भी पकड़ता है, आवाज तो छोड़ो संकल्प भी पकड़ता है कि कहाँ मेरे मालिक ने मुझे बुलाया है और दौड़ के जाएगा। तो सोचो हमें क्या बनना है? दोनों की शक्ल मिलती- जुलती है ना। पर एक कैसा है और एक कैसा है!

### **बाबा महाराणा प्रताप का चेतक अभी तक भी याद है!**

हाँ, अभी तक देखो, उसका पैर कट गया था फिर भी क्या किया? तीन पैर से उसने इतनी बड़ी नदी को पार करा दिया सोचो। ये वफादारी होती है, ये आज्ञाकारीता होती है अपने मालिक के प्रति। कभी धोखा नहीं देता कोई भी। तो हमें क्या बनना है सोचो, हर एक बच्चा अपने आप समझ में आ जाएगा। अपनी कमी कमजोरी को....। हाँ, पर जिनको गलती ही फील नहीं होती, जिनको रियलाइज़ ही नहीं है, कि मैं गलत हूँ, फिर उनके साथ मगजमारी करना ही खराब है। ये बड़ी बात है कि जिनको महसूस ही नहीं हो रहा है, जिनको ये ही पता नहीं कि मैं गलत हूँ, मैं गलत कर रहा हूँ, या मैं गलत कर रही हूँ कुछ भी, तो फिर क्या फायदा। फिर क्या कहेंगे उनको? आप बताओ? ( बाबा आप शक्ति देंगे तो हो जाएगा ) अच्छा, बाप तो सबको शक्ति देते हैं, बराबर मात्रा में देते हैं, एकदम बराबर किसी में कम ज्यादा नहीं। बाप एक ऐसा पिता है हमारा, जब वरदान और शक्ति देता है तो सबको बराबर देता है।

सब ठीक हो ना? सब अच्छे हो? नहीं आज तो खुश नहीं होंगे। आज खुश हो या दुखी हो? खुश होना? खुश रहना है, क्योंकि खुशी जैसी खुराक नहीं। पेपर तो आएंगे, पेपर ही नहीं आए तो भगवान के घर में ही क्या काम! दुनिया ही ठीक है। दुनिया में थोड़ी कोई पेपर आता है! देखो दुनिया में पेपर कभी नहीं आएगा। मालूम है क्यों? क्योंकि बैठे ही माया की गोदी में है! माया का जब मन करेगा रुलाएगी, जब मन करेगा हँसाएगी, जब मन करेगा मारेगी, जब मन करेगा कुछ करेगी। पेपर कहाँ आते हैं? बाप की

गोदी में बैठके पेपर आते हैं। ये याद रखना बाप की गोदी में बैठकर ही बाप पेपर लेगा। और हम ये सोचते हैं, नहीं ऐसा नहीं होना चाहिए, वो नहीं होना चाहिए, ये नहीं होना चाहिए। तो इससे बाबा क्या कहेंगे? तो ठीक है माया की गोदी में बैठो जाके फिर। ये नहीं होना चाहिए, वो नहीं होना चाहिए, तो कौन करता है फिर? तो किसकी गोदी में मजा है? अच्छा माया की गोदी में मजा है? माया कभी बाप के पास लेके जाएगी बताओ? माया कभी बाप से मिलवाएगी? हमेशा याद रखना बाबा ने पहले भी बोला ये बात, बहुत वारी बोला। सबसे पहले माया की पहचान करो कि माया है कौन? याद रखना- "जो बाप से दूर करे वो माया है"। "जिसके मिलते ही पुरुषार्थ तीव्र गती से बढ़ जाए वो बाप है"। जो आज बच्चे बोलते हैं ना, हर सेंटर में बड़ा धमाके से आवाज देते हैं - वहाँ माया बैठी है, मत जाना..., माया के पास मत जाना नहीं तो माया पकड़ लेगी...। तो माया के पास आके क्या होता है? पुरुषार्थ बढ़ता है! माया के पास आ करके बापकी याद आती है? इधर सभी बच्चे क्या बोलते हैं, इधर माया बैठी है। जो यहाँ आया उसका पुरुषार्थ बढ़ा। तो क्या माया हैं? चेक करो। हर एक बच्चे की परख शक्ति है, हर एक बच्चे को बुद्धि है, हर एक बच्चे को सोचने समझने की ताकत है। पहले पहचानो की माया का रूप क्या है। अगर माया बाप से दूर ले जावे... अच्छा अगर कहे हर सेंटर में तो माया को ही याद कर रहे हैं! दिन रात, सोते जागते, कैसे माया को ठिकाना लगाया जाए? कैसे माया को दूर किया जाए? तो कौन याद कर रहा है? किसको याद कर रहे हैं? जितने भी, जहाँ भी जो भी सेंटर है, तो किसको याद कर रहे हैं सब रोज? रोज किसको याद करके सोते हैं? रात को सपने भी माया के आते हैं! रोज किसको याद करते हैं? आप दूसरों को बोलते हो माया को याद नहीं करो, आप खुद रात भर माया को याद करते हैं। नींद फिट जाती है। तो ये देखो चाह के, या नहीं चाह कर के, अगर आप माया बोलते हैं, तो आप भी उस माया को ही याद कर रहें हैं। बार-बार छुप छुप के देखते हैं अच्छा, आज माया ने क्या बोला? अच्छा आज माया ने ये-ये बोला। हर कोई तोड़ निकालते हैं माया का। अभी भी कितनी कोशिश कर रहे हैं ना, ये बापको मालूम है। ये संदेश जरूर सुनना वो बच्चे जरूर सुने ये संदेश, कि आप क्या क्या कर रहे हैं। बाहरी रूप से नहीं, अंदर के रूप से। अंदर से क्या क्या कर रहे हैं, वो बाप को सब दिख रहा है, पर जो भी करो बाप रुकने वाला नहीं है, ये होके ही रहेंगा। ये बाप का वायदा है और पक्का वायदा है। क्योंकि बाप जो एक बार वायदा करता है, वो बराबर से निभाता भी है ठीक है बच्चों। ओके।

**बाबा मधुबन से फोन आता है, कहते हैं कि यहाँ पर तो बहुत अच्छा अनुभव होता है! निराकार रूप में बाबा हमको बहुत कुछ अनुभव कराता हैं।**

क्यों नहीं कराएंगे? जरूर कराएंगे। बाबा को बैठकर याद करो ना, जहाँ प्रेम होगा वहाँ अनुभव क्यों नहीं होगा। प्रेम की शक्ति ही ऐसी है। दुनिया के किसी भी मनुष्य को याद करोगे तो भी उसका अनुभव होगा। ये तो आप बाप को याद कर रहे हैं। वहाँ पे बाप की फीलिंग है, वहाँ पे बाप का प्रेम है, इतने साल तक बाबा ने वहाँ पार्ट बजाया है, तो क्या अनुभव नहीं होगा? हर दीवारों पे बाबा बाबा लिखा है, तो क्या अनुभव नहीं होगा? कितने वर्ष तक बाबा वहाँ पर रहे, तो क्या अनुभव नहीं होगा? क्यों

अनुभव नहीं होगा? अनुभव तो होगा ना....। और जहाँ बच्चों की दिल साफ है, दिल सच्ची है, बाप से प्रेम करते हैं, तो अनुभव भी होगा। ये अच्छी बात है, पर बाप तो अपना कर्तव्य करने आए हैं। जो बापके साथ में है वो बापके दिल में है।

**बाबा टीचर बहनें कहती हैं, शांतिवन में अभी भी हमको अव्यक्त बापदादा की पालना अनुभव हो रही है, बहुत अच्छा हैं सबकुछ अनुभव हो रहा हैं।**

बहुत अच्छी बात है ना। जब तक सबकुछ दिख रहा है, सबकुछ है, सबकुछ मेन्टेन (maintain) है, पालना तो होगी ना। मानो 100 रोज अंधेरा हो जावे, तब देखो, पालना लेकर दिखाओ। मानो बत्ती चली जावे, 100 रोज के लिए तब दिखाना पालना कैसे होती है। ये अच्छी बात है- जो दिखता है वो बिकता है, ये कहावत है। जहाँ अच्छे पर्दे, अच्छा फैसिलिटी, अच्छी चीज, सुख सुविधा, वहाँ बाबा की अनुभूति भी अच्छी होगी ना! आरामदायक है ना! बच्चे... कुछ भी अच्छी चीज होती है ना, कोई भी आराम दायक चीज होती है, तो वो आराम दे सकती है, वो सुकून नहीं दे सकती, वो प्रेम नहीं दे सकती, वो पालना नहीं दे सकती। वो सिर्फ क्या दे सकती है? आराम दे सकती है। एक अच्छा सा यहाँ पे सोफा रख दो। बैठते ही क्या बोलोगे? बहुत अच्छा लगा, आराम मिल रहा है। क्या बोलोगे? आराम मिल रहा है। ऐसे बोलोगे क्या- वाह! क्या सुख मिल रहा है! क्या शांति मिल रही है! क्या प्रेम मिल रहा है! क्या ज्ञान मिल रहा है! ऐसे सोफे पे बैठ के बोलोगे? क्या ज्ञान की प्राप्ति हो रही है! ऐसे कभी बोलते हैं? नहीं...। क्या बोलते हैं बैठते ही? बड़ा आराम मिल रहा है। आराम मिलता है, लेकिन जो सुकून होना चाहिए, जो सदाकाल का प्रेम होना चाहिए, जो शांति होनी चाहिए, वो नहीं मिलेगी, आराम मिलेगा।

आराम करने के लिए ही तो जाते हैं मधुबन में। बाबा ने क्या बनाया है उसको बताओ? सबको पता है बाबा ने उसको क्या बनाया है, जहाँ पे क्या मिले? आराम मिले। बच्चे दुनियादारी से थक के आए, तो बाप के घर में आवे, तो उसमें थकान उतर जावे। वहाँ आराम मिले, वहाँ बाबा का प्रेम मिले। यही तो बनाया है ना। आरामदायक चीज बनाई है। तो आराम की जगह आराम ही मिलेगा ना। और उस आराम में हम सोचते हैं कि सबकुछ आराम में ही है। ( और राम भूल गए!) आराम में आके राम को निकाल दिया। इतना आराम मिला... इतना आराम मिला... कि राम को ही भूल गए। तो क्या करना है? राम को नहीं भूलना है। जो राम, आराम दे, उसी राम को भूल जाए, तो वो आराम कब तक रहेगा? सोचो...।

कोई भी बोले हमारे बाबा की फोटो रखा है, तो उनको बोलो- ये हमारा भी बाबा है। आप तो फोटो से जीते हो, हम तो असली में बात करते हैं, ऐसे बोलना हैं। आप तो फोटो देखते हो, हम तो बात करते हैं बात! हमारे तो साथ रहता है! हमारे साथ चलता है! असली अनुभव उसको होता है जो साथी का हाथ

पकड़ के चले। बच्चे अच्छा है। देखो साकार में भी क्या था? मुट्ठी भर बच्चे! थोड़े से बच्चों को लेकर के, आज सोचो चारों तरफ बाप की आवाज है। अंतिम समय में हर किसी के दिल से निकलेगा- "मेरा बाबा आ गया!" ये देखना अज्ञानी से अज्ञानी बच्चा ये बोलेगा। उसको भले मालूम नहीं होगा, पर जब बाबा दिखाएगा "मेरा बाबा आ गया" हर एक के दिल से, अंदर से आवाज आएगी- "मेरा बाबा आ गया"! "प्यारा बाबा आ गया"! हर कोई ये आवाज देगा। तो इस चीज के लिए तैयार हो जाओ ठीक है। उन बच्चों में एक नारा जरूर लगाना है। क्या? "मेरा बाबा आ गया"! हर कोई दिल से बोले "मेरा बाबा आ गया" ठीक है। ये अब चलते चलते सुनाई देगा आपको कान में- "मेरा बाबा आ गया"! "मेरा बाबा आ गया"! और ये उस टाइम प्रत्यक्ष होगा, जिस टाइम जाने का टाइम होगा, समझ में आया? प्रत्यक्षता उस घड़ी होगी, जिस घड़ी अगले दिन जाने का समय आएगा।

( कार्यक्रम संबंधी बाबा से कुछ पूछा गया )

आपको परमिशन भी मिलेगी और एक बात और याद रखना, इस कार्य में आप कितनी ताकत लगाओगे वो आपके ऊपर है, पर बापका इसमें सौ परसेंट सहयोग रहेगा ये बाप की ताकत है ठीक है।

आज नौ देवियों की पूजा होती है। मतलब आज "शक्ति स्वरूपा"! का गायन होता है। सोचो सभी शक्तियाँ है? शक्ति में सब आ गया। शक्ति में सारी देवियाँ समाहित होती है। कैसे समाहित होती है बताओ? एक शक्ति में सारी देवियाँ समाहित होती है। क्या बोलते हैं, "शिव शक्ति"। शिव दुर्गा... शिव काली... शिव ऐसे नहीं बोलते हैं। शिव शक्ति माना उस शक्ति में ही सारी शक्तियाँ समा जाती है, इसलिए सोचो सबसे बड़ी शक्ति, असली शक्ति तो आपके साथ बैठी है! ये याद रखना। ये अभी आपको ऐसे लगता है ना, कि ये नॉर्मल है, ऐसे लाइट लेते हैं, हल्के में लेते हैं। ये याद रखना ये असली की शक्ति आपके साथ में है। जब असली रूप सामने आएगा, तब हम क्या सोचेंगे? ओ.... मैं बुद्धू निकला...! इतने समय से मैं इस शक्ति के साथ में था, और मैं कैसे पहचान नहीं पाया, कि ये वही शक्ति है? ये वही असली की शक्ति है, जिसके साथ में, मैं रहता था! जिसके साथ मैं बातें करता था! याद रखना, सिर्फ एक इतना पतला पर्दा है, जिस दिन वो खुलेगा उस दिन सारी दुनिया को साक्षात्कार होगा, और फिर अपने को भी याद करेंगे। फिर अपनी मूर्खता को भी याद करेंगे, कि हमने क्या-क्या मूर्खपंती की है, हमने क्या-क्या किया है। याद रखना ये सब चीजें। हमेशा ये रियलाइज होना चाहिए कि आप किसके साथ में हो! कौन साथ में है आपके!

अच्छा बच्चों फिर मिलेंगे... हमेशा खुश रहना है, बापकी याद में रहना है, अपने कर्मा को याद रखना है, आज का मेन पुरुषार्थ रहेगा कर्मा हमेशा कर... माँ....। माँ को कभी भूलना नहीं है। माँ को भूले तो रोना पड़ेगा, बहुत बुरी तरह से रोना पड़ेगा। हर घड़ी याद रखो कितना पाप कर्म है खाते में? कितना जमा किया है? कितना खाया है? ये सब याद रखो ठीक है। क्या करेंगे इन सब चीजों का? एक दिन तो



छोड़के जाना है। क्यों मेरे मेरे में बुद्धि फंसी है। कल को मानो सुनामी आ गई तो क्या होगा? ये जो जितने भी देश है, एक दूसरे से नेटवर्क जुड़े हुए हैं ना, कोई माल कहाँ से आता है, कोई माल भारत में कहाँ से आता है, कोई माल भारत से कहाँ से जाता है। कितने देश हैं? मानो उसमें से 20 खत्म हो गए, तो क्या होगा? पूरा नेटवर्क बिगड़ जाएगा, पूरा कनेक्शन। क्यों? क्योंकि ये पूरा पृथ्वी क्या है? ये सब चीजों से भरी हुई है। कोई चीज माल कहाँ से प्राप्त होता है, कोई कहाँ से होता है, तो फिर वो अदली बदली करते हैं, कि आप हमें ये दो हम आपको ये देंगे। ऐसे ही तो सब संसार चल रहा है ना, एक दूसरे से कनेक्शन जोड़के। सोचो उनमें से 20 या 10 भी खत्म हो गए तो क्या होगा? टोटल संतुलन बिगड़ जाएगा। ऐसा संतुलन बिगड़ेगा तो पूरे देश में हड़बड़, सब जगह हड़बड़ मच जाएगी। पूरे संसार में हड़बड़ी मच जाएगी। तो अब याद रखना है कि ये मेरे... ये तेरे... ये इसके... ये उसके...। अरे आप बच्चे अगले 10 सालों की फिक्र करते हो? अपन ने अगले टाइम की फिक्र नहीं की! आप अकेले होंगे या 2 होंगे या चार होंगे, और अपने साथ तो पूरी टीम थी, कितने बच्चे थे? (350 बच्चे)। आप सोचो इतने बच्चों का भोजन, अभी खाया और शाम को है ही नहीं। घर में अनाज ही नहीं है, घर में चावल का दाना भी नहीं है, लेकिन फिर भी फिक्र नहीं हुई। और आप उस बाप के बच्चे हो तो, आप कितने बुद्धू हो सकते हो, जो 10 साल के बाद की जो फिक्र करेगा! नंबर वन बुद्धू कहेगा बाबा उसको। (बाबा अभी मैया के पास भी कुछ नहीं था।) हाँ, अभी का पार्ट देखो। अभी अभी उनके पास कुछ भी नहीं था... कुछ भी नहीं था। (बैठने के लिए स्टूल तक नहीं था।) अब बताओ मैय्या ने कभी नहीं सोचा कि मेरा क्या होगा? कुछ भी नहीं था आपके इधर आयी तो। क्या था? बेगरी तो यही दिखा दी थी बाबा ने मैय्या को। फिर भी दिमाग नहीं हिला उनका। एक परसेंट नहीं हिला कि बाबा कल खर्चा कैसे चलेगा? घर लिया... बाबा किराया कैसे होगा? बेफिक्र रही बाबा को भी नहीं बोला किराया देना। ना... कभी नहीं बोला, एक बार भी नहीं बोला, सोचो। हम तो कुछ भी कमी होती है बार-बार चिट्ठी लिखते हैं - भगवान ये दे दो, भगवान वो दे दो। मैया के पास कुछ नहीं होते हुए भी कभी नहीं बोला, बाबा ये दे दो। ऐसी पावरफुल स्थिति। और किसी से एक पैसा, एक आने की मदद किसी से नहीं ली। ये कमाल की बात है। ये यहाँ प्रैक्टिकल देखा। और अपन इतने सारे बच्चों को लेकर के साकार में चले, 300 से ऊपर बच्चे, और अगले समय का भोजन नहीं है! और आपके पास आराम से 8 साल का होगा भरपूर। 8-10 साल अच्छे से खा सकते और फिर भी ग्यारवे साल की फिक्र है! ग्यारवे साल में मेरा खर्चा कैसे निकलेगा? ऐसे बुद्धू कहाँ मिलेंगे बताओ? क्या कहेंगे उनको? मूर्ख से महामूर्ख देखना है तो भी बाप के बच्चों को देखो, और समझदार से समझदार को देखना है तो भी बाप के बच्चों को देखो। हमेशा याद रखना ये विनाशी चीज है। सोचो, मानो सारी दुनिया में हलचल मचेगी, ये धन नहीं रहेगा... तो क्या इंसान जीवित नहीं बचेंगे? आज भी ऐसे ऐसे स्थान हैं जंगलों में, जहाँ पे कागज का नोट ही नहीं चलता! नोट है ही नहीं। जहाँ बिजली ही नहीं है! तो भी वहाँ इंसान जी रहे हैं, और आप सबसे अच्छे से जी रहे हैं, सोचो। हम कागज के नोट पे इतना भरोसा रखते हैं, कि ये कागज का नोट ग्यारवे साल तक मेरा साथ देगा! कितने मूर्ख है! कितने बुद्धू है, ये कागज का नोट ग्यारवे साल तक मेरा साथ देगा! इसका कोई भरोसा नहीं। अरे नोटबंदी हुई तो क्या हुआ? कौन से कागज के नोट ने साथ दिया? बंद हो

गया! हुआ? ये तो बीच-बीच में झटके मिलते रहते हैं ना सबको। दिखाता रहता है बाबा, देखो अभी क्या हुआ? अभी क्या होने वाला है, अब देखो।

बेफिक्र होकर जियो ना... बिना चिंता के जीने में कितना मजा है! निश्चिंत होकर के बाप की गोदी में सिर रखो ना... आज्ञाकारी बनो ना... वफादार बनो ना... कितना सुकून मिलेगा, जहाँ कोई फिक्र, कोई टेंशन नहीं हो। कितना मजा आता है वहाँ पर जहाँ बिंदस जीवन जीए! एक छोटा बच्चा... पालने में झूलने वाले बच्चे को कोई फिक्र नहीं होती, उसको मालूम है, मेरी माँ मेरेको उठा लेगी, मेरा बाप मेरे को संभाल लेगा। तो क्यों छोटा बच्चा बनने में प्रॉब्लम आ रही है? अपन हाइट से छोटे नहीं बोल रहे हैं, वो तो वैसे भी बनने वाले नहीं हैं। आप यहाँ से बन जाओ नन्हा मुन्हा बच्चा, छोटा बच्चा! जैसे छोटे बच्चे का अपना दिमाग नहीं चलता ना, माँ जहाँ उठाए, जहाँ सुलाए, जो खिलाये, जो पिलाये। बच्चा बस भूख लगी तो उँवा उँवा करेगा, भूख लगी है। बस भूख लगी है तो उँवा उँवा करो। दूध घी तो माँ पिलायेंगी ना। तो शिव बाबा हमारी सच्ची माँ है। बच्चे को थोड़ी टेंशन होती है कि कल को माँ दूध पिलाएगी या नहीं पिलाएगी? कल को खाने को मिलेगा या नहीं मिलेगा? होती है क्या? वो नहीं सोचता। ऐसे बेफिक्र बादशाह बन जाओ, एकदम निश्चिंत! और निश्चिंत का मतलब ये नहीं है कि अपने कर्मा को त्याग दो। और सोचो नौकरी छोड़ोना... नौकरी में बड़ी टेंशन होती है... बाबा ने बोला है कि क्या टेंशन लेनी!... क्यों फिक्र करना? इसका मतलब ये नहीं होता है। उस कर्म को करते हुए बेफिक्र रहना ये पावरफुल स्टेज होती है ठीक है। उस कर्म को करते हुए बेफिक्र जीना, रहना, ये हमारी स्टेज पावरफुल होती है।

ठीक है फिर मिलेंगे... बोलो "मेरा बाबा आ गया"! "प्यारा बाबा आ गया"! कौन सा बाबा?"शिव बाबा आ गया"! "शिवबाबा आ गया" ठीक है!